ShodhVarta
An International Peer-Reviewed Journal
www.shodhvarta.in

ISSN: 2583-8938
Vol 02 Issue 04

संपादकीय

भारत एक सांस्कृतिक विविधता वाला देश है। इसके विकास में यहाँ की क्षेत्रीय संस्कृति, भाषा-दर्शन, कला, परम्पराएं, विरासत, रीति-रिवाज, रहन-सहन, लोक विश्वास और मानवीय मूल्यों शामिल है। भारत की समृद्ध कला परंपरा में लोक कलाओं का महत्वपूर्ण स्थान है। इन्हीं लोक कलाओं में चित्रकला का बहुत पुराना एवं समृद्ध इतिहास विद्यमान है। मानव सभ्यता के विकास के साथ ही चित्रकला का भी विकास हुआ। लोक चित्रकला परंपरा में वर्ली/वारली चित्रकला को शोधवार्ता के इस अंक में कवर पृष्ठ पर स्थान दिया गया है।

महाराष्ट्र के ठाणे ज़िले में वरली जाति के आदिवासियों का निवास है। 'वारली' शब्द की व्युत्पत्ति जड़ या वारला में है जिसका अर्थ है भूमि या क्षेत्र का एक टुकड़ा। इतिहासकारों का धारणा है कि वारली की परंपरा 2,500 ईसा पूर्व और 3,000 ईसा पूर्व के बीच की है। इन्हीं वारली लोगों ने इस कला को विकसित किया; जिसे वारली लोक कला कहा गया। वारली चित्रकला को 10वीं सदी से जोड़कर देखा जाता है। वरली जन-जाति महाराष्ट्र के दक्षिण से गुजरात के पश्चिमी घाटों की सीमा तक फैली हुई है। वरली आदिवासियों की अपनी मान्यताएं, रीति रिवाज और परम्पराएं हैं। वरली आदिवासियों की अपनी भाषा तो है जिसका संबंध दक्षिणी भारत की इंडो-आर्यन भाषाओं से माना जाता है। इस भाषा की कोई लिपि उपलब्ध नहीं है।

वारली चित्रकला में मानव समुदायों और प्रकृति के बीच घनिष्ट संबंधों को दर्शाता जाता है। इस चित्रकला में फसल पैदावार, शिकार, मछली पकड़ना, खेती, उत्सव, नृत्य, पेड़, जानवरों आदि से जुड़े प्राकृतिक दृश्य प्रायः इसके केंद्रीय विषय होते हैं। वारली चित्रकला में चित्रों को सजाने के लिये चावल की लेई, गोंद एवं जल के मिश्रण का प्रयोग किया जाता है, साथ ही तूलिका के रूप में बाँस की छड़ी का प्रयोग किया जाता है।

वरली समुदाय के लोक कल्पनाओं, रीति-रिवाजों, मान्यताओं, मनोदशाओं को वारली चित्रकला में दर्शाया जाता है; जिसके अधिकांश चित्र ज्यामितीय डिजाइनों पर बने होते हैं। इस चित्रकारी में वृत्त, चक्र, त्रिकोण एवं वर्ग के प्रयोगों से भावों का चित्रात्मक देखने को मिलता है। इस चित्रकला में प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति देखने को मिलती है। प्रत्येक आकृति का कोई न कोई अर्थ होता है, जैसे वृत्त (o) का आशय सूर्य व चंद्रमा है। त्रिकोण (Δ) का अर्थ पर्वत है। इन चित्रों में बिंदु (•) सृजन एवं सृष्टि का प्रतीक है। बिंदु से बनती है रेखाएं सीधी खड़ी (|) रेखा गति और विकास की प्रतीक है। आड़ी या पड़ी (_) रेखा प्रगति और स्थिरता की, तिरछी (/) रेखा आगे बढ़ने की दिशा दर्शाते हैं। तरंगायित (~) रेखा प्रवाह की प्रतीक है। एक दूसरे को काटती रेखाएं (×) विरोध, संघर्ष और युद्ध की सूचक है। तीर (<<—>>) की तरह दोनों दिशा में बढ़ती रेखाएं पूर्ण विकास को दर्शाती है। समकोण (T) पर मिलती रेखा उदासीनता की प्रतीक है। तीन बिंदू; तीन देवता- ब्रह्मा, विष्णु, महेश या तीन देवी- लक्ष्मी, सरस्वती, काली या तीन गुण-सत्व, रज, तम या तीन शक्ति ज्ञान, इच्छा, क्रिया या तीन काल-भूत, भविष्य, वर्तमान या तीन अनुभूतियाँ- सत, चित, आनंद आदि प्रतीकों को व्यक्त करते हैं। वर्तमान में यह कला घरों की दीवारों के साथ-साथ कागज और कैनवास पर उतरकर भारत के साथ ही पूरे विश्व में वारली कला का वैभव को विखेर रही है।

जय हिन्द!

संपादक
शोधवार्ता